International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(2): 138-141

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(2): 138-141
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 27-12-2021
Accepted: 12-02-2022

डॉ० कमलेश वर्मा
ऐ0प्रो0, संस्कृत, ठा0 बीरीसिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ० कमलेश वर्मा
ऐ0प्रो0, संस्कृत, ठा0 बीरीसिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

पुनः अवतरण

डॉ० कमलेश वर्मा

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2022.v8.i2c.1686

प्रस्तावना

मृत्यु के बाद अग्नि केवल शरीर को ही नष्ट करती है । आत्मा का प्रवेश कर्म विपाक के अनुसार अन्य योनि अथवा शरीर में हो जाता है । इस तरह आत्मा दूसरा शरीर धारण करती है ऋग्वेद के यमसूक्तानुसार आत्मा अमर है । सनातन धर्म में पुनर्जन्म का एक चक्र बनाते हुए आत्मा के जीवन में पुन: अवतरण "या पुनर्जन्म की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं की एक प्रणाली की रचना करती है । पुनर्जन्म मानव योनि में ही नहीं होते बल्कि धरातल पर जन्म और मृत्यु का चक्र 84 लाख योनियों में चलता है परंतु मानव योनि में कर्म के अनुसार सत्कर्म - इस चक्र से निकलना संभव है। परलोक के विषय में यह संदेह है कि मृत्यु के पश्चात पुनः अवतरण"कैसे हो सकता है ?

चरक संहिता - शा० अ०१

परलोक के विषय में प्रत्यक्ष का तो विषय नहीं परंतु परोक्ष का विषय है । इस पर विद्वानों के अलग-अलग मत हैं - मनुष्य की तुलना पौधे से की जा सकती है (बीज अंकुर पौधा) मृत्यु होने के बाद मनुष्य अपने अच्छे बुरे कर्मों को छोड़ जाता है, उसके भौतिक शरीर का अंत हो जाता है शरीर पांच भौतिक तत्वों में विशीर्ण होकर बिखर जाता है। लेकिन उसके कर्मों का प्रभाव बना रहता है । वह समाप्त नहीं होता इसलिए मनुष्य अपना कर्मफल के उपभोग के लिए पुनः अवतरित होता है।

पुनः अवतरण के उद्देश्य

पुनर्जन्म के दो उद्देश्य हैं -

1. मनुष्यअपने जन्मों के कर्मों के फल का भोग करता है ।
2. जन्मों के कर्मों के भोगों के अनुभव प्राप्त करके नए जीवन में इनके सुधार का उपाय करता है ।

जिसे जीवात्मा बार-बार जन्म लेकर निरंतर विकास की ओर बढ़ती जाती है। पुण्यों का क्षय हो जाने पर वे जीव पुन: इस मृत्युलोक में प्रवेश करते है।

योग वशिष्ठ - सर्ग-१ पृष्ठ -4 गीता प्रेस गोरखपुर-२६३००५

कभी-कभी जन्म के समय में लेखिका का मत है - कि जिस प्रकार से शक्तिशाली दुष्ट मानव किसी की संपूर्ण संपदा पर अपना हक जमा लेता है । उसी प्रकार सृष्टि की उत्पत्ति के समय सूक्ष्म जगत में दुष्ट आत्मा किसी को बलपूर्वक अलग कर श्रेष्ठ गर्भ से जीवन को धारण करता है और संस्कारित परिवार में जन्म लेता है । दूसरे असभ्य अकुलीन मां के गर्भ से सज्जन बालक जन्म ले लेता है।

पुनः अवतरण के कारण

ब्रह्माजी के मानस पुत्र सनत, सनन्दन, सनातन,सनत्कुमार यह चारों कुमार पूर्ण तत्वज्ञ थे। ब्रह्मा की सृष्टि में आयु में सबसे बड़े होने पर भी देखने में 5 वर्ष के बालकों जैसे जान पड़ते थे । भगवत दर्शन की लालसा से यह बैकुंठ धाम गए । चारों ब्रह्मा पुत्रों को बैकुंठ के द्वारपाल जय विजय ने रोक लिया -जबकि ब्रह्मापुत्र रोकने के योग्य न थे - ब्रम्हा पुत्रों नेकहा -कि तुम हो तो बैकुंठ नाथ के पार्षद - किंतु तुम्हारी बुद्धि बहुत मन्द है, तुम मंदबुद्धि के दोष से इस बैकुंठ लोक से निकलकर तुम पापमय योनियों में जाओ - जहां काम, क्रोध, लोभ प्राणियों के तीन शत्रु निवास करते हैं ।इस प्रकार से जय विजय द्वारपालों को ब्रह्मापुत्रों ने श्राप दिया । श्राप देने पर भगवान विष्णु ने अपने द्वारपालों से कहा-- तुम्हारा श्राप तो मैं भी खत्म कर सकता हूं, लेकिन नहीं । तब ब्रह्मा पुत्रों ने कहा - कि देत्ययोनि में जन्म लेने पर इन दोनों का उद्धार आपके ही कर कमलों द्वारा होगा ।इससे जय विजय का पुनः अवतरण - प्रथम जन्म में हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु, द्वितीय जन्म में रावण और कुंभकरण, तृतीय जन्म में शिशुपाल और दंतवक्र के रूप में तुम्हारा जन्म होगा ।

श्रीमद्भागवत् महापुराण -३ स्कंध -अध्याय -१५

ब्रह्माजी के मानस पुत्र जो सर्वथा निष्काम थे। ब्रह्मलोक में 1 दिन से त्रिलोकी नाथ सर्वशक्तिमान भगवान विष्णु वहां पधारे । सत्य लोक में निवास करने वाले सभी ने भगवान विष्णु का आदर सम्मान किया ।किंतु सनत्कुमार ने भगवान विष्णु का सम्मान नहीं किया ।तब श्री हरि ने उन्हें श्राप दिया कि तुम सरजन्मा कुमार के नाम से विख्यात हो, दूसरा शरीर धारण करो यह सुनकर कुमार ने श्री हरि को श्राप दिया - हे देवेश्वर आप अपनी सर्वज्ञता को कुछ समय के लिए छोड़कर अज्ञानी जीव के समान हो जाओगे । एक समय अपनी पत्नी को श्री हरि के चक्र से मारी गई देख - भृगु श्रृषि का क्रोध बहुत बढ़ गया, और बोले विष्णु आपको भी कुछ काल के लिए अपनी पत्नी से वियोग का कष्ट सहना पड़ेगा ।इस प्रकार से सनत्कुमार और भृगु के श्राप देने पर उनकी वाणी सत्य करने के लिए भगवान विष्णु ने मनुष्य रूप में श्री राम का पुनः अवतार लिया

"योग वशिष्ठ -सर्ग १, पृष्ठ ५
ब्राह्मण सुदास गौतम के श्राप से रासक्ष शरीर को प्राप्त हो गए थे ।
गौतमशापत: प्राप्त: सुदासो राक्षसी तनुम् ।
रामायण प्रभावेण विमुक्ति प्राप्तवानसौ ।।
श्रीमद् वाल्मीकि रामायण-- अ०-२, श्लोक-२४

कबन्ध का पुनः अवतरण-

सविधूय चितामान्शु विधूमोग्निरिवोत्थित: ।
अरजे वाससी विभ्रन्माल्यम् दिव्यं महाबल: ।।
श्रीमद् वाल्मीकिरामायण:-द्विसप्ततितम: सर्ग-श्लोक-४

महाभारत में अंबा राजकुमारी का शिखंडी के रूप में भीष्म पितामह को मारने के लिए पुनः अवतरण ।
इसी प्रकार श्रीमद् भागवत महापुराण में प्रन्जन अगले जन्म में राजा मोरध्वज की पत्नी बना। शास्त्रों और पुराणों में अनेकों महापुरुषों और महा विदुषियों का पुनः अवतरण का उल्लेख मिलता है ।

पुनः अवतरण के सिद्धांत

पुनः अवतरण का सिद्धांत उतना ही पुराना है - जितने यह हमारे वेद, यही हिंदुत्व, बौद्ध और जैन मतों की नींव है। प्राचीन मिस्रवासी इसी सिद्धांत में विश्वास करते हैं। यूनानी दर्शन शास्त्रों के दर्शन के लिए यह पुनः अवतरण का सिद्धांत नीव का पत्थर है -

भारतीय दर्शन - डा०रामप्रकाश सारस्वत-महालक्ष्मी प्रकाशन्-आगरा-पृष्ठ-२२

आत्मा का किसी विशेष शरीर से संयोग ही जन्म है, और उसे पृथक हो जाना ही मृत्यु। अपने कर्मों की गुणवत्ता के आधार पर यह आत्मा इस भौतिक शरीर को त्याग कर, किसी अन्य शरीर में प्रविष्ट हो जाती है। यानि पुनः अवतरित होती है ।

संस्कार और प्रवृत्तियां

1. भारतीय दर्शन के अनुसार प्रवृत्तियां पूर्वअनुभव का परिणाम हुआ करती है । शिशु स्वयं दुग्धपान करता है या छोटी सी मछली या छोटी सी बतख तैरती है । यह सब संस्कार और प्रवृत्तियों से सम्भव है। जिन्हें उसने पूर्व जन्म में प्राप्त किया ।

2. पूर्व जन्म कीअनुभूति पर ही पहली बार में ही प्रेम बढ़ने लगता है ।भगवान बुद्ध ने अपनी प्रिय पत्नी को अपने पूर्व जन्म में प्राप्त दयालुता के विषय में तथा अन्य बहुत से लोगों के जीवन के विषय में बताया -
3. प्रत्येक शिशु कुछ निश्चित प्रवृत्तियों सहित जन्म लेता है ।यह प्रवृत्तियां पूर्व जन्मों में कृत कार्यों से उत्पन्न होती हैं ।
   प्रवृत्तियों के प्रभाव से छोटे बालकों को गंभीर विषयों पर चिंतन करते सुना गया है, जबकि विद्वान बालकों के अन्य भाई-बहन सामान्य जन ही रहे । मानव में यह प्रवृत्तियां पिछले कर्मों के परिणाम स्वरुप हुआ करती है ।

   अस्येषाम् समष्टि: स्थूलशरीरमन्नविकारत्वादन्नमयकोष: स्थूलभोगायतनत्वाच्च स्थूलशरीरम् जाग्रदिति च व्यपदिश्यते।। - वेदान्त सार: पृष्ठ ९२

मनुष्य अपने जन्मों में अपनी प्रवृत्तियों और अभिरुचियों को विकास देता है, और आगे जन्म में आकर वह अति बुध्दिमान हो जाता है । यथा -
गौतम बुद्ध ने अपनी विविध जन्मों में अनुभवों को प्राप्त किया और अपने अंतिम जन्म में बुद्ध ज्ञानवान और प्रकाशमान हो गए । महात्मा बुध्द का भी पुनः अवतरण हुआ ।

सद् असद्गति-

   ते तम् भुक्त्वा स्वर्गलोकम् विशालम् क्षीणे पुण्ये मर्त्य लोकम् विशन्ति ।
   एवम् त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतम् कामकामा लभन्ते।।
   श्रीमद् भगवत गीता-अ०९-श्लोक२१

जीवात्माओं के पुण्य क्षीण हो जाने पर मृत्युलोक को प्राप्त होते हैं ।अर्थात पुनःअवतरण होता है ।यह गति सद् असद् गति का परिणाम हुआ करती है। मृत्यु के बाद इन्हें पितृयान् मार्ग मिलता है, इससे वे चन्द्रलोक को प्राप्त होते हैं ।किंतु यहां पर निवास तभी तक होता है जब तक उनके पुण्य रहते हैं ।

पुनः अवतरण और कर्म

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार मानव कर्म विपाक के अनुसार ही जन्म के बाद मरण, मरण के अनंतर जन्म ग्रहण करता है किंतु पुण्य कर्मों से मानव स्वर्गिक सुखों को प्राप्त करता है ।तथा नीच कर्म से नर्क की प्राप्ति होती है। तत्वज्ञान से रहित या शून्य---- वे बार-बार पुनः अवतरित वह मृत्यु को प्राप्त होते हैं ।आत्मा को शरीर से पृथक है। सभी जीवधारियों - हीन्, मध्य और महात्मा देवताओं सभी का विनाश निश्चित है।

   हीनस्य मध्यस्थ महात्मनो वा ।
   सर्वस्य लोके नियतो विनाश: ।।
   बुध्दचरितम्- सर्ग-३
   (श्रीमद् अश्वघोष द्वारा रचित)

ऋषि मुनियों एवं महा कवियों के मतानुसार प्रत्येक शरीर की मृत्यु निश्चित है तथा प्रत्येक जीव को उसके कर्म फल भोगने हेतु जन्म धारण करना पड़ता है। इसप्रकार से उसका पुनः पृथ्वी पर जन्म होता है।

निष्कर्ष

कर्म योग और ज्ञान योग के अवतार तथा ब्रह्मा के 16 कला अवतार आनंदकंद कृष्ण चंद्र भगवान की श्रीमद् भगवतगीता एक ऐसा ग्रंथ है ।कि जिस पर किसी मतान्तर रखने वाले व्यक्ति को शंका तथा अनास्था आदि नहीं है । जिन्होंने अपने उपदेश में अर्जुन को पुनः अवतरण के अनेक कथन कहे हैं । यथा-

   बहूनिमं व्यतीतानि जन्मानि तवचार्जुन ।
   तान्यहं वेद सर्वार्णि ना त्वम् वेत्थ परतंप ।।

अर्थात तुम्हारे और मेरे बहुत से जन्म हुए हैं, उन्हें मैं जानता हूं तू नहीं जानता । तथा –

   अनेक जन्मसिद्धास्त तो याति परांगतिम् ।

अर्थात योगी पुरुष अनेक जन्म में सिद्ध होकर परागति को प्राप्त कर पाता है । इसी प्रकार से -
"शुचीनांश्रीमतां गेहे योग भ्रष्टोऽभिजायते । योग भ्रष्ट योगी पुरुष बहुत ही पवित्र व श्रीमानो के घर में फिर से जन्म धारण करता है । जिससे वह अपने पिछले योग मार्ग का अभ्यास पूर्ण कर सके ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. योग वशिष्ठ - गीता प्रेस, गोरखपुर-२७३००५ सर्ग-१ पृष्ठ ५
2. श्रीमद्भागवत महापुराण - स्कंध ३, अ०१५
3. श्रीमद् वाल्मीकि रामायण - अ०२, श्लोक -२४, द्विसप्ततितम् सर्ग - श्लोक -४
4. भारतीय दर्शन - डॉ ०रामप्रकाश सारस्वत - महालक्ष्मी प्रकाशन पृष्ठ -२२
5. वेदांतसार -सदानंद योगी कृत -साहित्य भंडार मेरठ-२५०००२ - पृष्ठ ९२

6. श्रीमद् भगवत् गीता - अ०९ -श्लोक २१- गीता प्रेस गोरखपुर -२७३००५
7. ऋग्वेद - यमसूक्त
8. शतपथ ब्राह्मण -
9. बुद्धि चरितम् -- श्रीमद् अश्वघोष कृत